शक्ति तो उन्हीं से मिलेगी

जिस प्रकार डेस्कटॉप, लैपटॉप, मोबाइल, आदि डिस्चार्ज होने पर उसे हम चार्जर से कनेक्ट करते हैं, जिसके बाद फिर से वो अपनी सुचारु अवस्था में आता है। उसी प्रकार से जब हम पूरी तरह से अपने विकारों में लिप्त होते तो हम डिस्चार्ज होते, लेकिन खुद को चार्ज करने के लिए हमारे पास कोई सोर्स नहीं है। हमारा ये मानना है कि सोर्स तो है लेकिन उस सोर्स का हमें पता नहीं है। अगर हम सोर्स को जान जायें और उससे कनेक्ट हो जायें तो हम भी चार्ज हो सकते हैं।

इस घटनाक्रम को ऐसे समझते हैं कि जब हम सभी ऊर्जायें एक साथ इस धरती पर आती हैं और अपना बहुत अच्छा खेल करती हैं अर्थात् सब आत्मायें अपना-अपना रोल प्ले करती हैं तो कुछ समय के बाद आत्माओं की ऊर्जा में कमी आती जाती है। यह ऊर्जा एक समय में इतनी ज़्यादा घट जाती है कि हमारा कर्म उससे प्रभावित होता जाता है, अर्थात् हम सभी के कर्म में गुस्सा, नाराज़गी, दु:ख, तकलीफ, बढ़ जाती है। इसलिए हमें शक्ति की ज़रूरत तो पड़ेगी ना! इसलिए हमें थोड़ा सा इस बात को समझकर शास्त्रगत रूप से, वैज्ञानिक रूप से, आध्यात्मिक रूप से, उस सोर्स के बारे में जानना चाहिए जिससे हम फिर से ऊर्जान्वित हो जाएं। करना कुछ नहीं है, बस थोड़ा सा प्रयास है जो हम आपसे शेयर करना चाहेंगे। होता क्या है... हम परेशान हैं लेकिन हम अपनी समस्या को किसी के सामने रखने में कतराते हैं, ये होना स्वाभाविक है लेकिन मानना तो पड़ेगा ना कि हमें चाहिए तो सही, शक्ति। हमारी व्यक्तिगत मत है कि इस दुनिया में हमारा कोई भी सम्बन्ध इतना शक्तिशाली नहीं है जो हमें किसी भी तरह से अपने स्वभाव से, अपनी चलन से, अपने बोल से, हमें हील कर सके, बल्कि हम और ही ज़्यादा दु:खी हो जाते हैं क्योंकि वो आत्मायें भी तो कमज़ोर हो चुकी हैं ना! हमें उन्हें समझने से पहले थोड़ा खुद को समझना पड़ेगा। समझ यह है कि हम कौन हैं और क्या हमारा अस्तित्व है इस दुनिया में। हम प्रकृति के वश हैं अर्थात् पंच महाभूत द्वारा शक्तियों का इस्तेमाल करते हैं। अर्थात् देखना, सुनना, सोचना, सब हम प्रकृति के द्वारा ही तो करते हैं, जिससे हमारी ऊर्जा नष्ट होती जाती है और हम सभी अपने आप को शक्तिहीन महसूस करते जाते हैं।

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

इस दुनिया में एक ऐसी भी शक्ति है जो प्रकृति के पाँचों तत्वों से परे और पार है। उस शक्ति को दुनिया में कॉस्मिक एनर्जी या ब्रह्माण्डीय ऊर्जा कहते हैं। लेकिन इस ब्रह्माण्डीय ऊर्जा के केन्द्र में एक परम शक्ति है जिसे हम परमात्मा की संज्ञा देते हैं। ब्रह्माण्ड को कुछ नामों से जानते हैं, जैसे परलोक, ब्रह्मलोक भी नाम देते हैं, ये एक तरह से धाम है अर्थात् रहने का पवित्र स्थान जहाँ आत्मायें रहती हैं। उदाहरण के रूप में... जैसे दिल्ली राजधानी है, लेकिन उसमें किसी एक स्थान पर प्रधानमंत्री का निवास स्थान है। वैसे ही परमधाम बहुत बड़ा है, जहाँ हमारे पिता और हम आत्मायें निवास करती हैं। उसे हम अपना वास्तविक घर कहते हैं, जहाँ से आकर हम अपना पार्ट प्रकृति के साथ मिलकर बजाते हैं। वही एक सोर्स है जो हमारी ऊर्जा को मूल स्वरूप में ले आने में सक्षम है। करना क्या है... सबसे पहले प्रकृति को भूल अर्थात् देह को भूलकर उस परम शक्ति से जुड़ाव करना है, ताकि हम फिर से रिचार्ज और फ्रेश हो सकें।

फर्रूखाबाद-उ.प्र.। जिलाधिकारी मोनिका रानी को ईश्वरीय निमंत्रण देने के बाद ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. मंजु।

मन की बात

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: हम सभी धर्म को मानने वाले हैं। परन्तु आज देखा ये जा रहा है कि मनुष्य के कर्म उसके धर्म के अनुकूल नहीं रहे हैं। हम क्या करें जो कर्म धर्म के साथ जुड़ जाएं?

उत्तर: धर्म ने मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म सिखाये। धर्म था ही मनुष्य के कर्म पर अंकुश लगाने के लिए। परन्तु समय बीता, मनुष्य में गिरावट आई व योंकि उसने धर्म का अनुसरण करना बंद कर दिया। परिणामत: धर्म मंदिरों तक सीमित रह गया या ग्रन्थों में सिमट गया। सभी धर्मों का यही हाल हुआ। इस कारण से मनुष्य के पास धर्म का बल नहीं रहा। अब पुन: आवश्यकता है कर्म को धर्म से जोड़ने की। धर्म मनुष्य को पवित्रता सिखाता है व श्रेष्ठ आचरण सिखाता है तो किसी आयु तक उसे संयमित जीवन जीना ही चाहिए। चार विशेष कर्म जीवन में ले आयें तो धर्म के साथ कर्म भी जुड़ जाएगा। सबको सुख देना, ईमानदारी से कार्य व्यवहार करना, मुख से मृदु व नम्रतापूर्ण वचन बोलना तथा लोभ व इच्छाओं का गुलाम न होना। इन श्रेष्ठ कर्मों को जीवन में अपनाने से पुण्य कर्मों का खाता बढ़ता रहेगा और धर्म के बहुत से उपदेश स्वत: ही जीवन में आ जाएंगे। इसके विपरीत यदि मनुष्य अति विषय वासनाओं में रहता है, यदि वह पाप कर्मों में प्रवृत्त रहता है, यदि वह दूसरों का धन हड़पता है और यदि वह दूसरों को सताता है, तो वह धर्म का अनुयायी नहीं है। कर्म, धर्म के साथ जुड़ जाए इसके लिए परमात्मा से योगयुक्त होकर शक्ति लेना भी आवश्यक है।

प्रश्न: बाबा हमेशा कहते हैं, कर्म करते हुए कर्म से न्यारे रहो। क्या यह सम्भव है - यदि हाँ तो कैसे?

उत्तर: मनुष्य का प्रत्येक कर्म उस पर अपना प्रभाव डाल रहा है, यों कहें कि कर्म उसे बांध रहे हैं अर्थात् वह कर्मबंधन में जकड़ता जा रहा है। परन्तु हमारा लक्ष्य है - कर्मातीत होना। कर्मातीत स्थिति का अर्थ है कर्म के प्रभाव से मुक्त रहना व कर्म के परिणाम के प्रभाव से भी मुक्त रहना। परन्तु यदि हम देहभान में रहकर कर्म करते हैं तो हमारे कर्म हमारे लिए बंधन का काम करते हैं, जबकि आत्मिक स्थित में रहकर किये जाने वाले कर्म दिव्य कर्म कहलाते हैं और ऐसे कर्म जीवन को दिव्य बनाने वाले हैं। हम ऐसे ढंग से कर्म करें कि हमें कर्मोपरांत यह लगे कि मानो हमने कुछ भी नहीं किया। यही आत्मा की निर्लिप्त स्थिति है। इसे ही कह दिया है कि आत्मा निर्लेप है। आत्मा निर्लेप नहीं है, बल्कि यह उसकी सम्पूर्ण योगयुक्त स्थिति है। कर्म करने से पूर्व हम जिस स्मृति में होते हैं, उसके वायब्रेशन्स पूरे कर्म को प्रभावित करते हैं। इसलिए हमारे कर्म दिव्य व अलौकिक हों, तो कर्म से पूर्व इस तरह अभ्यास करें। प्रथम- यह संकल्प नैचुरल कर दें कि मेरा हर कर्म परमात्म-अर्थ है। मैं अपने या परिवार के लिए कर्म नहीं कर रहा हूँ। बाबा से बातें करें -बाबा मेरा हर कर्म तुम्हारे लिए है। द्वितीय- कर्म के परिणाम को भी प्रभु अर्पण करें। चाहे परिणाम अच्छा हो या बुरा, महिमा हो या ग्लानि, हार हो या जीत, सब प्रभु अर्पण ....। तृतीय- अभ्यास करें कि मैं आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से कर्म करा रही हूँ और बाबा हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ हैं। कभी यह अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ या मैं एक महान आत्मा हूँ। कभी परमात्म स्वरूप पर बुद्धि को स्थिर करके कर्म करें। ऐसा करने से कर्म करते भी न्यारेपन की अनुभूति होती रहेगी।

प्रश्न: हमारे यहाँ एक स्लोगन लिखा रहता है कि स्वयं को बदलो तो जग बदलेगा। इसका क्या अर्थ है और क्या एक व्यक्ति के बदलने से विश्व बदल जायेगा?

उत्तर: देखने में तो ऐसा ही लगता है कि अकेला चना क्या भाड़ फोड़ेगा! एक व्यक्ति अच्छा बन भी जाए तो इससे क्या होता है। परन्तु सत्य कुछ और है। आपको यह जानना चाहिए कि ये महावाक्य किसने किसको कहे! हम बता दें- स्वयं भगवान ने देवकुल की महानात्माओं के लिए ये वचन उच्चारे। वे आत्माएं इष्टदेव, देवी हैं और पूर्वज हैं। उन एक-एक महानात्माओं से लाखों महानात्माएं जुड़ी रहती हैं। उनका परिवर्तन उन लाखों आत्माओं को परिवर्तित कर देता है। वे ही इस कल्पवृक्ष के मास्टर बीज भी हैं। उनका परिवर्तन विश्व की अनेक आत्माओं पर प्रभाव डालता है। इस तरह यह कार्य चलता है। देखिए..एक घर में जो परिवार का बड़ा होता है, उसकी स्थिति का प्रभाव सब पर पड़ता है। यदि वह क्रोधी है, कटुभाषी है तो परिवार पर उसका बुरा प्रभाव देखा जा सकता है। इसी तरह जो सृष्टि के बड़े हैं, पूर्वज हैं, उनका प्रभाव भी पूरी सृष्टि पर पड़ता है।

प्रश्न: हमारे सेवाकेन्द्र के मकान को किसी ने बड़ी ही चालाकी से अपनी पत्नी के नाम करा लिया है। हमें इन बातों का इतना ज्ञान नहीं था, उसने हमारे भोलेपन का फायदा उठाया। हम इसमें क्या योग का प्रयोग करें?

उत्तर: अवश्य ही उस व्यक्ति के मन में पाप आ गया है। संसार में पाप अति बढ़ता जा रहा है। अपने ही अपनों को धोखा दे रहे हैं। अब थोड़े ही समय में ऐसे पापी बड़ा कष्ट पायेंगे और जो भगवान को धोखा देने की सोच रहे हैं वे तो स्वयं के लिए रसातल जाने का मार्ग बना रहे हैं। सम्पत्ति आने वाले समय में मनुष्य को ज़्यादा कष्ट देगी। विनाशकाल में सुखी वही रहेंगे जिन्होंने अपनी सम्पत्ति को पुण्यों में बदल दिया होगा। आप डरें नहीं, आप भोले हैं तो भोलानाथ आपके साथ है। भगवान क्योंकि परम सत्य है, इसलिए उसे केवल सत्य ही स्वीकार्य है। आप सच्चे मन से उन्हें क्षमा कर दें और इक्कीस दिन योग करें, एक घण्टा प्रतिदिन। योग से पहले दो स्वमान याद करें - मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ व विघ्न विनाशक हूँ। इससे सेवा में आया यह विघ्न नष्ट हो जाएगा।

Contact e-mail
bksurya8@yahoo.com